

विभाग को कलात्मक रूप देने की विस्तृत योजना बनाई। फिल्मी दुनिया के अपने संबंधों का इस्तेमाल करते हुए इन्होंने प्रसिद्ध संगीतकारों से प्रसार गीतों की धुनें बनवाई। नौशाद, एस.डी. बर्मन, सी. रामचंद्र, अनिल विश्वास, उस्ताद अकबर अली खां आदि तथा लता मंगेशकर, आशा भोंसले, गीता राय, सुमन कल्याणपुर, मुकेश, मन्ना डे, मोहम्मद रफी, तलत महमूद, सुधा मल्होत्रा आदि सब लोग इनके बुलावे पर रेडियो पर आए। इन्होंने आकाशवाणी पर गाया। यह कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हुआ था। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी के लिए जो अद्वितीय कार्य नरेन्द्र शर्मा ने किया वह था- मनोरंजनपरक गीतों का कार्यक्रम- 'विविध भारती' का ढांचा खड़ा करना तथा उसकी प्रस्तुति। इन्होंने अखिल भारतीय वैविध्यपूर्ण गीतों को न केवल ढांचा खड़ा किया, वरन उसकी ऐसी सुरुचिपूर्ण प्रस्तुत की कि श्रोता रेडियो गोवा अथवा रेडियो 'सीलोन' को भूलने लगे। कहा गया कि यह आकाशवाणी का ऐसा इंकलाबी कदम था जिसने न सिर्फ उसकी खोई हुई साख वापस दिलाई, बल्कि आकाशवाणी के श्रोताओं में नई रुचि पैदा की और उनमें हल्के-फुल्के प्रोग्रामों द्वारा राष्ट्रीयता और देशप्रेम का अहसास जगाया और आगे चलकर यह कार्यक्रम आकाशवाणी के लिए 'लक्ष्मी का अवतार' साबित हुआ।

नरेन्द्रजी ने ही 'विविध भारती' का नामकरण किया वे इसका स्वरूप निर्धारित करने और उसके निर्माण के सम्पूर्ण सूत्रधार बने। इस कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए इन्हें अथक परिश्रम करना पड़ा। इन्होंने पुराने फिल्मी और गैर-फिल्मी गीतों को एक-एक करके सुना। इसमें से सिर्फ दस प्रतिशत गीत ही काम में आते थे, शेष व्यर्थ।

इन गीतों पर इतना अधिक परिश्रम किया कि नरेन्द्रजी बीमार पड़ गए। मगर इन्होंने अच्छे-अच्छे गीत पसंद किए। विख्यात संगीत-निर्देशकों ने उन्हें संगीतबद्ध किया था। चोटी के गीतकारों से उन्हें गवाया गया। यह अपने आपमें अनूठा कार्यक्रम बना। 'विविध भारती' कार्यक्रम इतना

“ नरेन्द्रजी ने ही 'विविध भारती' का नामकरण किया वे इसका स्वरूप निर्धारित करने और उसके निर्माण के सम्पूर्ण सूत्रधार बने। इस कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए इन्हें अथक परिश्रम करना पड़ा। इन्होंने पुराने फिल्मी और गैर-फिल्मी गीतों को एक-एक करके सुना। इसमें से सिर्फ दस प्रतिशत गीत ही काम में आते थे, शेष व्यर्थ। इन गीतों पर इतना अधिक परिश्रम किया कि नरेन्द्रजी बीमार पड़ गए। मगर इन्होंने अच्छे-अच्छे गीत पसंद किए।

लोकप्रिय हुआ कि 'रेडियो सीलोन' की छवि धूमिल होने लगी। आप थोड़े समय में ही 'विविधभारती' के चीफ प्रोड्यूसर बना दिए। इसमें अनेक प्रयोग करते हुए गज़लों और गीतों का मिला-जुला कार्यक्रम 'गजरा' बनाया गया और उसे 'हल्की-फुल्की' चटाखेदार हिन्दुस्तानी जबान की 'कंपेयरिंग' में पिरोया। इस प्रकार के पंचरंगी प्रोग्राम लोगों को बहुत पसंद आए।

उनकी यह यूनिट एकजुट होकर काम करती थी। भाषा के विषय में अवश्य मतवैभिन्य रहता था। नरेन्द्रजी की मान्यता थी कि ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जो संस्कृत के निकट हो क्योंकि वही देश के विभिन्न हिस्सों में सर्वाधिक समझी जाएगी। 'विविधभारती' का नामकरण इसी की पुष्टि करता है। 'विविधभारती' के अतिरिक्त 'पत्रावली', 'बंदनवार', 'मंजूषा', 'स्वरसंगम', 'रत्नाकर' आदि भी ऐसे ही नाम हैं, जो तत्सम प्रधान हैं।

दूसरे आकाशवाणी की पुरानी मान्यताओं और सरकारी तंत्र के तले दबे रेडियो के खिलाफ उसमें रोष था जिसे सुधारने के लिए ये अपने स्तर पर कार्य करते रहते थे। अन्य सुधार करने वालों को प्रोत्साहित भी करते थे। श्री अमीन सयानी का वक्तव्य इसका प्रमाण है "आकाशवाणी से पुराने जाले हटाकर उसमें नया उत्साह जगाने की मेरी बेताबी पंडिजी ने देखी। परिवर्तन की राहों पर हठधर्मी की दीवारों से मेरा टकराना देखा और देखकर मुस्कराए। और कहा- 'रुको नहीं, डिगो नहीं।' जो तुम लोग कर रहे हो, सब उचित है। इसे अपना मिशन समझकर बस लगे रहो। एक न एक दिन तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और स्वीकार भी की जाएंगी।"

1953 से 1971 में सेवानिवृत्ति तक नरेन्द्र शर्मा ने एकाग्रचित्त और पूरे मनोयोग से आकाशवाणी की सेवा की। हालांकि इन्हें फिल्मों में गीत लिखने की भी अनुमति प्राप्त थी पर इन्होंने आकाशवाणी के सेवाकाल में फिल्मों में गीत नहीं लिखे। इनके इसी महत्वपूर्ण योगदान के कारण इन्हें 'प्रोड्यूसर-एमेरिटस' बनाया गया, परन्तु ये निर्लिप्त भाव से अपने काम में संलग्न रहे। ■